जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – अप्रैल 2025 ।। अंक – 57 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

अन्दर के पृष्ठों में...

आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक मिसाल बनी मसाला उद्यमी अनीता देवी (पृष्ठ – 02)

ग्राम संगठन ने बदली गायत्री के जीवन की दिशा (पृष्ठ – 03)

देवकी देवी की प्रेरक यात्रा: सौर सिंचाई के माध्यम से बदली जिंदगी (पृष्ठ – 04)

कृषि गतिविधियों के माध्यम से आत्मनिर्भर बनती जीविका दीदियाँ

जीविका द्वारा महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण हेतु कई जीविकोपार्जन गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जा रहा है, इनमें कृषि गतिविधियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आज बिहार की लगभग 38.26 लाख महिलाएँ विभिन्न कृषि गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं और इससे न केवल उनकी आमदनी बढ़ रही है, बल्कि वे अपने परिवार की जीवनशैली में भी सकारात्मक परिवर्तन ला रही हैं।

पोषण और आय का स्रोत बना किचन गार्डन और पोषण बगीचा

कई दीदियाँ अपने घरों के आसपास किचन गार्डन और पोषण बगीचा विकसित कर रही हैं, जिससे उन्हें ताजे और पोषणयुक्त फल–सब्जियाँ मिल रही हैं। इससे परिवार की पोषण आवश्यकताएँ पूरी हो रही हैं। वह अपने उत्पादों को बाजार में बेचकर आय अर्जित भी कर रही हैं।

आधुनिक खेती के लिए कृषि यंत्र बैंक की सुविधा

संकुल स्तरीय संघों द्वारा संचालित कृषि यंत्र बैंक (सीएचसी) ने खेती को सरल और आधुनिक बना दिया है। इससे किसानों का श्रम और समय दोनों की बचत हो रही है। दीदियाँ इन यंत्रों का उपयोग कर उत्पादकता बढ़ा रही हैं और इससे लागत में भी कमी आ रही है। जीविका द्वारा संचालित कृषि यंत्र बैंक न सिर्फ आधुनिक उपकरण उपलब्ध करवा रहे हैं, बल्कि दीदियों को इनका कुशलतापूर्वक उपयोग भी सिखाया जा रहा है। इससे खेती के कार्य में तेजी आई है और उत्पादन में भी सुधार हुआ है।

तकनीकी ज्ञान और प्रशिक्षण का लाभ

कृषक प्रशिक्षण एवं सूचना केंद्र (एफटीआईसी) के माध्यम से कृषकों को कृषि से संबंधित नवीनतम तकनीकों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इससे खेती की गुणवत्ता और उत्पादकता दोनों में सुधार हो रहा है। साथ हीं, कृषि उत्पादक समूहों का गठन कर दीदियाँ सामूहिक खेती की ओर बढ़ रही हैं, जिससे लागत घट रही है और लाभ भी बढ़ रहा है।

ड्रोन तकनीक में नवाचार की पहल

ड्रोन टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में भी दीदियों ने कदम बढ़ाया है। कई दीदियों को ड्रोन संचालन का प्रशिक्षण दिया गया है, जिससे वे खेतों में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का छिड़काव कर रही हैं। यह पहल खेती को अधिक आधुनिक बना रही है।

कृषि उद्यमिता की दिशा में मजबूत कदम

कृषि उद्यमी योजना के अंतर्गत दीदियों को कृषि उद्यमी के रूप में विकसित किया जा रहा है। ये दीदियाँ स्थानीय किसानों को तकनीकी सलाह, गुणवत्तापूर्ण बीज, जैविक खाद और आवश्यक कृषि यंत्र प्रदान कर रही हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है और कृषकों को स्थानीय स्तर पर सुविधाएँ मुहैया हो रही है।

महिला–प्रबंधित कृषि उत्पादक कंपनी

जीविका दीदियों द्वारा संचालित कृषि उत्पादक कंपनियाँ किसानों को सस्ते दर पर गुणवत्तापूर्ण बीज, खाद और अन्य सामग्रियाँ उपलब्ध करा रही हैं। साथ ही ये कंपनियाँ किसानों के उत्पादों का संग्रहण कर उन्हें बाजार से जोड़ने में मदद कर रही हैं, जिससे उत्पादों का सही मूल्य मिल रहा है जिससे किसानों की आय में बढ़ोतरी हो रही है।

तरल जैविक खाद और ऊर्जा समाधान

तरल जैविक खाद का निर्माण भी दीदियों द्वारा किया जा रहा है। यह खाद पशु अपशिष्ट और सब्जियों के अवशेषों से बनती है, जो पर्यावरण अनुकूल होने के साथ–साथ रसोई गैस का विकल्प भी प्रदान करती है।

विशिष्ट कृषि उत्पादों की खेती से आमदनी में वृद्धि

स्वयं सहायता समूह की सदस्या अब विशिष्ट कृषि उत्पाद जैसे मडुआ, बाजरा, शामा, रंगीन फूलगोभी, शिमला मिर्च और गेंदा फूल की खेती कर रही हैं, जिससे उन्हें अच्छी आमदनी हो रही है। ये फसलें बाजार में मांग के अनुसार उगाई जा रही हैं। इन फसलों की खेती से किसानों को नई पहचान भी मिल पा रही है।

वित्तीय सहायता और संगठनात्मक समर्थन

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से दीदियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। साथ ही संकुल संघों को सहकारी विभाग द्वारा निबंधन प्रमाण पत्र प्रदान कर उनके औपचारिक संचालन को मान्यता दी जा रही है।

इस प्रकार, कृषि के क्षेत्र में जीविका दीदियों की सक्रिय भागीदारी ने न केवल उन्हें आर्थिक रूप से सक्षम बनाया है, बल्कि गांवों में सामाजिक और आर्थिक बदलाव की एक नई कहानी भी लिखी है। ये दीदियाँ अब आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी हैं और ग्रामीण भारत की प्रगति की धुरी बन रही हैं।

खाद्य प्रसंस्करण उद्यम से आत्मनिर्भरता की ओर कदम

बिहार के भागलपुर जिले के कहलगांव प्रखंड अंतर्गत बंशीपुर पंचायत के देवरी महेशपुर गाँव की रहने वाली शीला देवी आज अपने उद्यम के माध्यम से न केवल खुद आत्मनिर्भर बनी हैं, बल्कि 13 अन्य महिलाओं को भी रोजगार देकर उन्हें सशक्त बना रही हैं। शीला देवी शिवगुरु जीविका स्वयं सहायता समूह की सचिव हैं। वह वर्ष 2015 से शिवगुरू स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई है।

शीला देवी ने वर्ष 2016 में समूह से 70,000 रूपये ऋण लेकर खाद्य प्रसंस्करण आधारित सूक्ष्म उद्यम की शुरुआत की थी। इसके बाद उन्हें सीड कैपिटल के रूप में वर्ष 2024 में 40,000 का अतिरिक्त ऋण मिला, जिससे उन्होंने अपने व्यवसाय का विस्तार किया। आज वे अपने घर पर ही अचार, मुरब्बा, बांस का मुरब्बा, बड़ी, पापड़ तथा चना, कुरथी, मसूर, अरहर, उरद और राजमा के दाल का उत्पादन एवं विपणन करती हैं।

शीला देवी के उत्पादों की बिक्री एनटीपीसी कहलगांव स्थित शॉपिंग कॉम्पलेक्स में होती है। साथ ही वे ग्राहकों की मांग पर घर–घर जाकर सामग्रियों की आपूर्ति भी करती हैं। अभी अधिकांश कार्य हाथों से किया जाता है, इसलिए शीला देवी आगे अपने कार्य को यंत्रीकृत करने के लिए योजना बना रही हैं।

शीला देवी बताती हैं कि वह हर महीने लगभग 70,000 से 75,000 रूपये की बिक्री करती हैं, जिससे उन्हें 20,000 से 25,000 की शुद्ध आय हो जाती है। आज वह अपने परिवार का बेहतर तरीके से भरण–पोषण कर रही हैं और समाज में एक सफल उद्यमी दीदी के रूप में पहचानी जा रही हैं।

आत्मनिर्भरता की प्रेरणादायक मिसाल बनी मसाला उद्यमी अनीता देवी

औरंगाबाद जिला के हसपुरा प्रखंड अंतर्गत हसपुरा पंचायत की रहने वाली अनीता देवी, जो पहले एक साधारण गृहिणी थीं, आज एक सफल मसाला उद्यमी के रूप में आत्मनिर्भरता की मिसाल बन चुकी हैं। अनीता देवी जय माँ जीविका स्वयं सहायता समूह और विद्यासागर जीविका महिला ग्राम संगठन की सदस्य हैं। उनके पति श्री आलोक कुमार की इलेक्ट्रिक दुकान से हर महीने मात्र 5,000 से 6,000 रुपये की आय होती थी, जिससे चार बच्चों और पूरे परिवार का भरण–पोषण मुश्किल था।

बर्ष 2021 में अनीता देवी जीविका समूह से जुड़ीं और उन्होंने बचत, ऋण और व्यापार की जानकारी हासिल की। उन्होंने पति को इलेक्ट्रिक की दुकान बंद कर नया व्यवसाय शुरू करने की सलाह दी। उन्होंने समूह से 50,000 रूपये का ऋण लेकर तैयार मसाले खरीदकर बेचने का काम शुरु किया।

इसके बाद, अनीता देवी के लिए एक और बड़ा अवसर तब आया जब उन्हें प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य उद्यम उन्नयन योजना के तहत 40,000 रुपये की सहायता प्राप्त हुई। इस सहायता से उनका हौसला और बढ़ा और उन्होंने अपने मसाला व्यवसाय को विस्तार देने का निर्णय लिया।

उनकी मेहनत, शुद्धता और गुणवत्ता के चलते हसपुरा प्रखंड के दुकानदारों और होटलों में उनके मसाले की मांग तेजी से बढ़ी। आज इसके माध्यम से उनकी मासिक आय 25,000 से 30,000 रूपये तक पहुंच चुकी है और उनके सभी बच्चे बेहतर शिक्षा भी प्राप्त कर रहे हैं। अनीता देवी आज औरंगाबाद जिले में महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता की प्रेरणा स्रोत बन चुकी

जीविका से जुड़कर सुमित्रा दीदी बनीं आत्मनिर्भर

किशनगंज जिला के पोठिया प्रखंड के आमबागा गांव, पंचायत बुधरा की रहने वाली सुमित्रा सोरेन, रौनक स्वयं सहायता समूह और चंदा ग्राम संगठन से जुड़ी हुई हैं। वे भारत संकुल संघ की भी सदस्य हैं। सुमित्रा दीदी का सपना था कि वे अपने बच्चों को पढ़ा–लिखा कर स्वावलंबी बनाएँ, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण बच्चों के भरण–पोषण और शिक्षा में कठिनाई हो रही थी। मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करना भी चुनौतीपूर्ण था।

सुमित्रा दीदी हमेशा से अपना स्वरोजगार शुरू करना चाहती थीं, लेकिन पूंजी की कमी आड़े आ रही थी। इसी दौरान उन्होंने जीविका के रौनक स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। समूह से जुड़ने के बाद सुमित्रा दीदी ने 30,000 रुपये का ऋण लिया और अपने गांव आमबागा में एक छोटी किराना दुकान शुरू की। दुकान से हुई आमदनी और समूह से मिले अतिरिक्त ऋण से उन्होंने एक ई–रिक्शा भी खरीदा, जिसे उनके पति जोगन मुर्मू चलाते हैं।

दुकान और ई–रिक्शा की बढ़ती आमदनी से सुमित्रा दीदी ने पशुपालन का कार्य भी शुरू किया। उन्होंने गाय और बकरी पालन के माध्यम से अपनी आय को और मजबूत किया। आज सुमित्रा दीदी को इन सभी कार्यों से महीने में लगभग 18,000 से 22,000 रुपये तक की आमदनी हो रही है। उनकी वार्षिक आय अब 2 लाख रुपये तक पहुँच गई है।

सुमित्रा दीदी कहती हैं कि जीविका से जुड़ने से उन्हें न केवल पूंजीगत सहयोग मिला, बल्कि आत्मविश्वास और क्षमता में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई। आज वे गर्व से कहती हैं कि स्वरोजगार के माध्यम से उनका परिवार खुशहाल हो गया है और वे अपने बच्चों को बेहतर भविष्य की ओर अग्रसर कर रही हैं। वह लखपति दीदी के रूप में अपनी पहचान बना रही हैं।

ग्राम संगठन ने बदली गायत्री के जीवन की दिशा

गायत्री देवी, बिहार के पूर्णियाँ जिला के अमौर प्रखंड की रहने वाली हैं। वे नयनशी जीविका स्वयं सहायता समूह से वर्ष 2015 में जुड़ीं है। गायत्री दीदी हीरा जीविका महिला ग्राम संगठन की भी सदस्य हैं।

शादी के कुछ ही साल बाद उनके पति गंभीर बीमारी से ग्रसित हो गए। उस समय उनके गोद में एक छोटा बच्चा था और घर में खाने के लिए अनाज तक नहीं बचा था। यह उनके जीवन का सबसे कठिन दौर था। इसी मुश्किल समय में उन्होंने नयनशी समूह का सहारा मिला।

गायत्री देवी शिक्षित थीं और उन्होंने इंटरमीडिएट तक पढ़ाई की थी। इसी कारण ग्राम संगठन द्वारा उन्हें जीविका मित्र के रूप में कार्य करने हेतु चयनित किया गया। इस भूमिका के ज़रिए उन्हें सरकारी योजनाओं की जानकारी मिलने लगी। उनके पति लंबे समय तक इलाज के बाद तो स्वस्थ हो गए, लेकिन रोजगार का कोई साधन नहीं था। तब वर्ष 2016 में गायत्री दीदी ने स्वयं सहायता समूह से 40,000 रुपये का ऋण लेकर किराना दुकान खोलने का साहसिक निर्णय लिया।

दुकान से उन्हें आर्थिक स्थिरता मिली और उनका जीवन धीरे–धीरे खुशहाल होने लगा। आज उनके परिवार में कुल छह सदस्य हैं। दो बेटे और एक बेटी में से दो बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं।

गायत्री देवी की सफलता के पीछे उनकी शिक्षा, समझदारी, समूह का सहयोग और सरकारी योजनाओं की जानकारी का बड़ा योगदान है। उनकी यह कहानी इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि कठिनाइयों के बीच भी साहस और सही निर्णय से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा जा सकता है।

देवकी देवी की प्रेरक यात्राः सौर सिंचाई के माध्यम से बदली जिंदगी

बिहार के मुज़फ्फरपुर जिला के बोचहा प्रखंड स्थित करणपुर गाँव की रहने वाली देवकी देवी की कहानी आत्मनिर्भरता, साहस और सामुदायिक सशक्तिकरण की मिसाल है। उन्होंने यह साबित किया कि परिस्थितियाँ चाहे जितनी भी कठिन क्यों न हों, अगर इरादा मजबूत हो और सही मार्गदर्शन मिले, तो बदलाव संभव है।

देवकी देवी का परिवार लंबे समय से आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। उनके पति की आय स्थिर नहीं थी और उनके पास केवल आधा कट्ठा कृषि योग्य भूमि थी, जो गुजारे के लिए बिल्कुल भी पर्याप्त नहीं थी। खेती में कम उत्पादन, सिंचाई के साधनों की कमी और आमदनी की अनिश्चितता ने उनके जीवन को बेहद कठिन बना दिया था। इसी बीच, उन्होंने अपने गांव में कृष्णा जीविका महिला स्वयं सहायता समूह से जुड़कर उम्मीद की एक नई किरण देखी।

आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम

साल 2023 में उन्हें जीविका के माध्यम से सौर सिंचाई योजना की जानकारी मिली। उनके पति को शुरुआत में इस योजना पर भरोसा नहीं था, परंतु देवकी देवी का आत्मविश्वास अडिग था। फूलमाला जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ की सक्रिय सदस्य होने के कारण, उन्हें इस योजना की पहली सूची में स्थान मिला। यह उनके परिश्रम, ईमानदारी और समूह के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का परिणाम था।

सौर सिंचाई प्रणाली की स्थापना

देवकी देवी ने 15 जून 2023 को अपने खेतों में सौर सिंचाई प्रणाली की स्थापना की। इस परियोजना की कुल लागत 5,77,455 रुपये थी, जिसमें 1,47,455 रुपये उन्होंने स्वयं से उपलब्ध कराया। उन्हें 1,35,000 रुपये का सुरक्षित ऋण कृष्णा स्वयं सहायता समूह से मिला। इस प्रणाली में 5000 किलोवाट के सोलर पैनल, 5 एईच.पी. का सबमर्सिबल पंप और VFD डिवाइस मिला, जो कम रखरखाव में 20–25 वर्षों तक कुशल संचालन की क्षमता रखते हैं।

ऋण सहायता और तकनीकी विस्तार

प्रारंभिक पंप स्थापना के बाद, देवकी देवी को पंप हाउस के निर्माण और पाइपलाइन विस्तार के लिए और सहायता की आवश्यकता हुई। ऐसे समय में, समूह ने फिर से सहयोग किया। उन्होंने अपने स्वयं सहायता समूह से 50,000 रुपये का पुनः ऋण लेकर 500 फीट तक पाइपलाइन का विस्तार किया, जिससे सिंचाई प्रणाली की पहुंच और दक्षता में जबरदस्त सुधार हुआ।

प्रशिक्षण और दक्ष संचालन

जीविका द्वारा उन्हें सौर सिंचाई प्रणाली के संचालन और रखरखाव पर विशेष प्रशिक्षण भी दिया गया। इस प्रशिक्षण ने न केवल उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया, बल्कि उन्होंने खुद यह सुनिश्चित किया कि तकनीकी प्रणाली कुशलता से संचालित हो और लंबे समय तक उपयोगी बनी रहे।

समुदाय पर व्यापक प्रभाव

देवकी देवी की यह पहल केवल उनके लिए नहीं, बल्कि पूरे समुदाय के लिए बदलाव लेकर आई। इस सौर सिंचाई प्रणाली से 25 एकड़ कृषि भूमि की सिंचाई संभव हुई और 66 किसान इससे लाभान्वित हुए। पहले रतनपुरा और आस–पास के किसान डीजल पंप पर निर्भर रहते थे, जिसमें प्रति 1.25 डिसमिल भूमि की सिंचाई पर 150 रुपये खर्च होता था। लेकिन सौर सिंचाई के बाद यह लागत घटकर 30 रुपये हो गयी। इससे न केवल किसानों की लागत में भारी कटौती हुई, बल्कि पर्यावरण की दृष्टि से भी यह कदम सराहनीय रहा।

सोलर दीदी के रूप में पहचान

आज देवकी देवी को पूरे करणपुर गांव और आसपास के क्षेत्रों में 'सोलर दीदी' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने सौर पंप को 1141.5 घंटे तक संचालित किया और इससे 1,40,000 रुपये की आय अर्जित की। उनकी इस पहल ने उन्हें एक सामाजिक लीडर के रूप में स्थापित कर दिया है।

देवकी देवी की यह कहानी केवल एक महिला की सफलता नहीं है, बल्कि यह उस सोच का परिणाम है जो परिवर्तन को अपनाने, सीखने और समाज के साथ मिलकर आगे बढ़ने में विश्वास रखती है। उन्होंने यह साबित किया कि यदि सही मार्गदर्शन, समूह का सहयोग और आत्मविश्वास हो, तो सीमित संसाधनों के बावजूद भी असंभव को संभव किया जा सकता है। उनकी यह यात्रा उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो जीवन में बदलाव लाने की इच्छाशक्ति रखती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार